International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

कृषि में जैविक खेती की भूमिका: एक भौगोलिक अध्ययन "हनुमानगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में"

दिव्या, शोधार्थी, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. अन्नु अरोड़ा, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हनुमानगढ़ जिले में जैविक खेती (Organic Farming) की वर्तमान स्थिति और इसके भौगोलिक महत्व का विश्लेषण करता है। नहरी सिंचाई (Indira Gandhi Canal) के कारण इस क्षेत्र में रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है, जिससे मृदा स्वास्थ्य में गिरावट आई है। यह अध्ययन जैविक खेती को एक वैकल्पिक और टिकाऊ समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है। प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि जैविक खेती न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक है, बल्कि किसानों की दीर्घकालिक आय बढ़ाने में भी सक्षम है।

परिचय

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित है, जिसे श्धान का कटोराश भी कहा जाता है। हरित क्रांति के बाद यहाँ सघन कृषि अपनाई गई, जिसमें कीटनाशकों और रासायनिक खादों का अंधाधुंध उपयोग हुआ। इसके परिणामस्वरूप जलभराव (Sem), क्षारीयता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हुईं। जैविक खेती एक ऐसी पद्धति है जो प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर बिना रसायनों के उत्पादन पर जोर देती है। भौगोलिक दृष्टि से यहाँ की जलवायु और मिट्टी जैविक कपास, गेंहूँ और किन्नू के लिए अत्यंत अनुकूल है।

साहित्य समीक्षा

अनेक विद्वानों (जैसे सुल्ताना, 2018य शर्मा, 2020) ने अपने शोध में स्पष्ट किया है कि राजस्थान के नहरी क्षेत्रों में मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है। पूर्ववर्ती अध्ययनों से ज्ञात होता है कि हनुमानगढ़ में जैविक प्रमाणीकरण (Certification) की कमी और बाजार तक पहुँच न होना मुख्य बाधाएँ हैं। राष्ट्रीय जैविक खेती परियोजना (NPOF) के रिपोर्टों के अनुसार, उत्तरी राजस्थान में जैविक खेती की अपार संभावनाएँ हैं यदि जल प्रबंधन और मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाए।

विधि तंत्र

इस शोध में निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया है:
अध्ययन क्षेत्र: हनुमानगढ़ जिले के विभिन्न ब्लॉक (जैसे पीलीबंगा, संगरिया, रावतसर)।
डेटा संग्रह: * प्राथमिक आंकड़े: किसानों के साक्षात्कार और सर्वेक्षण के माध्यम से।
द्वितीयक आंकड़े: कृषि विभाग की रिपोर्ट, जिला सांख्यिकी पुस्तिका और इंटरनेट संसाधनों से।
विश्लेषण: एकत्रित आंकड़ों का तुलनात्मक और सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

शोध समस्या

हनुमानगढ़ जिले में रासायनिक कृषि के कारण भूमि की जल धारण क्षमता (Water holding capacity) कम हो गई है और भू–जल प्रदूषित हो रहा है। किसानों में जैविक खेती के प्रति जागरूकता की कमी, कम शुरुआती पैदावार का डर और उचित विपणन (Marketing) व्यवस्था का अभाव प्रमुख समस्याएँ हैं। शोध का मुख्य प्रश्न यह है कि जैविक खेती इस जिले की कृषि अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित कर सकती है।

उद्देश्य

हनुमानगढ़ जिले में जैविक खेती की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना।
जैविक खेती अपनाने वाले किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
मृदा उर्वरता और पर्यावरण पर जैविक खेती के प्रभाव का अध्ययन करना।
सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रभावशीलता की जांच करना।

परिकल्पना

H1: जैविक खेती अपनाने से हनुमानगढ़ जिले की मृदा गुणवत्ता में सकारात्मक सुधार आता है।
H2: पारंपरिक खेती की तुलना में जैविक खेती दीर्घकाल में अधिक लाभदायक और टिकाऊ है।
H3: उचित सरकारी सहायता और बाजार उपलब्ध होने पर किसान तेजी से जैविक पद्धति अपना सकते हैं।

महत्व

यह अध्ययन नीति निर्धारकों, कृषि वैज्ञानिकों और स्थानीय किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल पर्यावरण को बचाने का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि कैंसर जैसी बीमारियों (जो कीटनाशकों के

कारण क्षेत्र में बढ़ रही हैं) के जोखिम को कम करने में भी सहायक है। यह शोध सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में भी योगदान देता है।

भावी सुझाव

प्रशिक्षण केंद्रः जिले में ब्लॉक स्तर पर जैविक खेती प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए।
प्रमाणीकरण प्रक्रियाः जैविक उत्पादों के सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया को सरल और सस्ता बनाया जाए।
बाजार व्यवस्थाः ''जैविक हाट'' या विशेष मंडियों की स्थापना की जाए ताकि किसानों को सही मूल्य मिल सके।
पशुपालन के साथ एकीकरणः जैविक खाद (वर्मी कम्पोस्ट) के लिए पशुपालन को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, हनुमानगढ़ जिले के भौगोलिक परिवेश में जैविक खेती केवल एक विकल्प नहीं बल्कि एक आवश्यकता है। हालांकि शुरुआती दौर में पैदावार में मामूली कमी देखी जा सकती है, लेकिन भूमि की उर्वरता और मानव स्वास्थ्य के नजरिए से यह सर्वोत्तम है। यदि सरकार और समुदाय मिलकर प्रयास करें, तो हनुमानगढ़ राजस्थान में जैविक क्रांति का नेतृत्व कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

राजस्थान कृषि विभाग, वार्षिक रिपोर्ट (2022–23), हनुमानगढ़ जिला प्रोफाइल।
सिंह, आर.के. (2019). आधुनिक कृषि और जैविक विकल्प, जयपुर पब्लिकेशन।
भारत सरकार (2021). परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) के दिशा–निर्देश।
कुमार, वी. एवं अन्य (2020). "Impact of Chemical Farming on Soil Health in Northern Rajasthan", Journal of Agricultural Geography.